ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में सूचना तथा संचार तकनीक की भूमिका

कल्पना सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

1980 के दशक के आरम्भ में भूमण्डलीकरण, अन्तर्राष्ट्रीयकरण व निजीकरण की प्रक्रियायें आस–पास शुरू हुई। उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण व्यापारिक व निगमित होने के साथ इसका संस्थानीकरण हो गया। साथ ही बाजार–आधारित अर्थव्यवस्था की अवधारणा उच्चतर शिक्षा में साहित्य तथा विभिन्न शोध में अपनी उपस्थिति दर्शाने लगी। यह तथ्य स्पष्ट होने लगा है कि उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य अब ''रोजगार के योग्य'' से ''रोजगार की ओर'' तथा ''ज्ञान'' से सूचना की ओर सामान्य शिक्षा व जागरूकता से हटकर रोजगारोन्मुखी दक्षता और तकनीकी की ओर हस्तान्तरित हो रहा है।

उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में सूचना तथा संचार तकनीकी की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। जिससे सामाजिक शैक्षिक प्रतिमानों में अत्यधिक तीव्र गति से बदलाव आया है। ''बाजार का सिद्धान्त'' व उसकी शब्दावली विचारों तथा गतिविधियों पर हावी हो गयी है। तथा यह प्रक्रिया इस बात से स्वतन्त्र है कि अन्तर्राष्ट्रीयकरण तथा बाजार अर्थव्यवस्था के विरोध करने वालों का संख्या समर्थको की तुलना में अधिक है प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित है।

मुख्य शब्द : वितरित सीख, डिजिटल डिप्लोमा, वर्चुअल विश्वविद्यालय, निगमीकरण व मैक्डोनाल्डाइजेशन।

प्रस्तावना

उच्चतर शिक्षा के भूमंडलीकरण और अन्तर्राष्ट्रीयकरण प्रक्रिया के लिये सूचना और संचार तकनीक उत्तरदायी है क्योंकि इसने 'कभी भी' तथा 'कहीं भी' के आधार पर 'वितरित सीख' को संभव बना दिया है। इसको विश्वस्तर पर दक्ष मानव संसाधन की मांग की वृद्धि के परिणाम के रुप मे भी देखा जा रहा है, जिसका कारण ज्ञान–आधारित और तकनीक–संचालित अर्थव्यवस्था का उदय है। इसके अतिरिक्त 'सेवा के व्यवसाय' में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जिसमें उच्चतर शिक्षा भी सम्मिलित है। उच्च शिक्षा सेवा के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यापार स्कूलों की महत्वपूर्ण सहभागिता है। अन्तर्राष्ट्रीयकरण के बढ़ते हुए महत्व पर व्यापारिक संगठनों तथा व्यावसायिक स्कूलों के साथ–साथ स्वयं सरकारों की भी दृष्टि है।

अन्तर्राष्ट्रीयकरण केवल छात्र–छात्राओं और शिक्षकों की अन्तर्देशीय गतिशीलता के कारण ही नहीं बल्कि पारदेशीय, दूरस्थ तथा वितरित सीख के द्वारा भी हो रहा है। सूचना और संचार तकनीक को अन्तर्राष्ट्रीकरण के लगातार विस्तार के लिये सबसे कारकों के रूप में देखा जा रहा है। कुछ विद्वान इसे अत्यधिक गतिशीलता को कम करने के लिये एक 'आर्थिक साधन या राजनीतिक नीति' के रूप में देख सकते है। जेन नाइट (Jane Knight, 1999) के अनुसार उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को स्वयं भूमंडलीकरण प्रक्रिया के प्रति सक्रिय प्रत्युत्तर के रुप में देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त भूमंडलीकरण को व्यापार तथा बाजार के उदारीकरण द्वारा बढ़ती हुई केन्द्राभिमुखता और आर्थिक परस्पर निर्भरता के रुप में भी समझा जा सकता है। वर्तमान में छात्र–छात्राओं, उच्चतर शिक्षा के लिये आवश्यक पुस्तकों व अन्य सामग्रियों के बाजार और नवीनतम तकनीकी सेवाओं के लिये अत्यधिक प्रतियोगिता देखी जा सकती है।

अतः सूचना तथा संचार तकनीक तथा विशेषकर इंटरनेट ने भूमंडलीकरण और उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने में उत्प्रेरक का कार्य किया है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा सूचना तथा संचार तकनीक उच्चतर शिक्षा के भूमंडलीकरण के लियें उत्तरदायी सामाजिक कारकों को जानने का प्रयास करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में सूचना व तकनीकी की भूमिका का अध्ययन करना।
2. उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने वाले उत्प्रेरक कारकों का अध्ययन करना।
3. उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों को समझना।
4. उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में सूचना व तकनीकी की प्रासांगिकता को समझना।

उपकल्पना

1. प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से उच्चतर शिक्षा व संचार तकनीकी के मध्य अर्न्तसम्बन्ध को समझने का प्रयास किया गया है।
2. उच्चतर शिक्षा की परम्परागत व कार्यात्मक भूमिका को समझने का प्रयास करना।
3. उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण दिशा व दशा को द्वितीयक स्त्रोतो के माध्यम से अध्ययन करना।

प्रश्न यह है कि क्या उच्चतर शिक्षा के भूमंडलीकरण और अन्तर्राष्ट्रीयकरण और अन्तर्राष्ट्रीय प्रक्रिया के लिए सूचना और संचार तकनीक उत्तरदायी है क्योंकि इसने 'कभी भी' और 'कहीं भी' के आधार पर 'वितरित सीख' को संभव बना दिया है। इसको विश्वस्तर पर दक्ष मानव संसाधन की मांग की वृद्धि के परिणाम के रुप में भी देखा जा रहा है, जिसका कारण ज्ञान आधारित और तकनीक संचालित अर्थव्यवस्था का उदय है। इसके अतिरिक्त सेवा के व्यवसाय में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जिसमें उच्च्तर शिक्षा भी सम्मिलित है। उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यापार में व्यापार स्कूलों की महत्वपूर्ण सहभागिता है। अन्तर्राष्ट्रीयकरण के बढ़ते हुये महत्व पर व्यापारिक संगठनों तथा व्यावसायिक स्कूलों के साथ–साथ स्वयं सरकारों की भी दृष्टि है।

अन्तर्राष्ट्रीयकरण केवल छात्र–छात्राओं और शिक्षकों की अन्तर्देशीय गतिशीलता के कारण ही नहीं बल्कि पारदेशीय, दूरस्थ तथा वितरित सीख के द्वारा भी हो रहा है। सूचना और संचार तकनीक को अन्तर्राष्ट्रीयकरण के लगातार विस्तार के लिये सबसे बड़े कारकों के रुप में देखा जा रहा है। कुछ विद्वान इस अत्यधिक गतिशीलता को कम करने के लिये एक 'आर्थिक साधन या राजनीतिक नीति' के रुप में देख सकेत है। जेन नाइट (Jane Knight, 1999) के अनुसार उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को स्वयं भूमंडलीकरण प्रक्रिया के प्रति सक्रिय प्रत्युत्तर के रुप में देखा जा सकता है। वर्तमान में छात्र–छात्राओं, उच्चतर शिक्षा के लिये आवश्यक पुस्तकों व अन्य सांमगतियों के बाजार और नवीनतम तकनीकी सेवाओं के लिये अत्यधिक प्रतियोगिता देखी जा सकती है।

अतः सूचना तथा संचार तकनीक और विशेष रुप से इंटरनेट ने भूमंडलीकरण और उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने में उत्प्रेरक का कार्य किया है। यद्यपि इस सम्बन्ध में अनेक अध्ययन भी किये गये हैं। जो इस प्रकार है :–

1. सूचना तकनीक के वकास में उच्चतर शिक्षा के निर्यात के लिये बड़ा अवसर प्रदान करत है (क्राफ्ट एट एल, 1998:468)
2. संचार कर तकनीकी विकास का शक्तिशाली साधन है जो उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को और आगे बढ़ाने में सहयोग करता है तथा उच्चतर शिक्षा के अन्तर्गत प्रजातान्त्रिक मूल्य प्रदान करता है। (इंटरनेशनल एसोसिएट ऑफ यूनिवर्सिटीज, 1998)
3. विश्वविद्यालय व कालेजों के छात्र/छात्राओं ने तकनीकी की सहायता से भूमंडलीकरण की क्षमताओं को जानने का प्रयास किया है। (अमेरिका कौन्सिल ऑफ एजुकेशन, 2002)
4. उच्चतर शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण इंटरनेट सेवाओं के विश्वस्तर पर प्रसार और उसके शैक्षिक समुदाय के द्वारा प्रयोग का स्वाभाविक परिणाम है। कम्प्यूटर नेटवर्क अन्तर्राष्ट्रीयकरण प्रक्रिया का एक प्रमुख साधन हो सकता है (फावा–डे–मोरेस और साइमन, 2000)
5. शिक्षा में तकनीकी भूमिका को इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्चतर शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण और भूमंडलीकरण सूचना और संचार तकनीक, विशेषरुप से इंटरनेट में, समय और स्थान की सीमा को समाप्त करने में विशेष भूमिका निभायी है। (Thune and Welle-Strand, 2005) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि सूचना तथा संचार तकनीक ई–मेल जैसे 'समय स्वतन्त्र' साधनों के द्वारा संचार करना अत्यन्त सरल सिद्ध हो रहा है। शिक्षकों का विभिन्न क्षेत्रों में रहते हुये पारस्परिक संपर्क रखना संभव हुआ है। इस पारस्परिक सत्र के कारण शिक्षा दोतरफा प्रक्रिया बन गयी है। अनेक छात्र–छात्रओं ने पहचानरहित रहते हुये अपने विचारों को व्यक्त किया है। जिससे वे स्वयं को तनाव रहित अनुभव कर रहे हैं प्रामाणित तकनीक के प्रसार ने सूचना और संचार को संपूर्ण विश्व में कहीं भी वितरित करना सरल बना दिया है। इसने विभिन्न प्रतिनिधियों, वितरण इकाईयों तथा अन्य सम्बद्ध संस्थानों के बीच परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना भी अत्यधिक सरल बनाया है।
6. सूचना और तकनीक में सीमा रहित या पार–देशीय सरकारों या पार–देशीय शिक्षा के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण करने की अद्भुत क्षमता है। सीमा रहित शिक्षा से हमारा तात्पर्य परस्पर जुड़ी हुई गतिविधियों की श्रृंखला से है, जिसमें ई–सीख, अन्य पार देशीय सुविधाएं और विभिन्न सीमाओं को पार करने वाले नए सुविधा प्रदानकर्ता भी सम्मिलित है। उपरोक्त विभिन्न प्रकार की सीमाओं में 'भौगोलिक','क्षेत्रीय' और 'वैचारिक' सुविधाएं भी सम्मिलित हैं (रियान, 2002)
7. संचार तकनीक के इन नए तरीकों को उच्चतर शिक्षा के 'बाजारीकरण' और 'वस्तुकरण' के कारण और परिणाम के रुप में देखा जा सकता है। अधिकांश विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में उच्चतर शिक्षा के लिये तीव्र प्रतिस्पर्धा देखी जाती है परन्तु दूरस्थ शिक्षा का बाजार मुख्यतः क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय रहता है,

परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि तकनीक को उच्चतर शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण तथा भूमंडलीकरण के समर्थक के रुप में देखा जाता है परन्तु इसे 'संचार करने वाली ताकत' के रुप में नहीं देखा जा सकता। अधिक से अधिक इसे विश्व स्तर पर उच्चतर शिक्षा संस्थानों के नियमित गतिविधियों के रुप में माना जाता है। यद्यपि तकनीक के प्रयोग को शिक्षा के प्रशासन व प्रबन्धन हेतु उपयोगी माना जाता है।

अनेक विद्वानों ने उच्चतर शिक्षा में तकनीक की भूमिका के नकारात्मक पक्षों को उजागर किया है कि इसके कारण 'डिजिटल डिप्लोमा' प्राप्त करने वालों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है तथा उच्चतर की गुणवत्ता में गिरावट आयी है। तकनीक को उच्चशिक्षा के लिये अच्छा माना जाता है परन्तु गहन शिक्षा के लिये नहीं। 'वर्चुअल शिक्षा' में शिक्षक के चेहरे के भाव को समझने, आवेश या मनोस्थिति को जानने के लिये विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है परन्तु ये कभी भी 'आमने–सामने' की शिक्षा का विकास नहीं बन सकते, जिसमें चेहरे की भाव, शरीर की गति, आवाज की तीव्रता आदि का अपना विशेष होता है।

इसी प्रकार सामूहिक पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियों, महंगे खेलों तथा अन्य विविध प्रकार के खेल सम्बन्धी गतिविधियों का भी कोई विकल्प नहीं हो सकता। डिजिटल डिप्लोमा चाहने वालों की रुचि प्रासंगिक सूचनाओं में अधिक होती है जोकि भविष्य में उनके व्यवसायों तथा जीवनयापन के लिये उपयोगी हो। वे ऐसी तकनीकी शिक्षा में रुचि रखते हैं जो अधिक व्यावसयिक और रोजगार आधारित हो। जिससे इस प्रक्रिया में 'मूलज्ञान' या 'जीवन के ज्ञान' से संभवतः वंचित रहने की संभावना रहती है। वर्चुअल शिक्षा द्वारा सीख में तकनीक के प्रयोग का परिणाम उच्चतर शिक्षा के 'औद्योगिक', 'वस्तुकरण', 'स्वचालन' और 'आम प्रचलन' के रूप में देखा जा सकता है। इसके कारण उच्चतर शिक्षा के व्यापार में 'गैर–शैक्षिक' और निगमित क्षेत्र का प्रवेश भी संभव है।

'वर्चुअल विश्वविद्यालयों' को 'विशाल विश्वविद्यालयों' के रूप में देखा जा रहा है जो परम्परागत विश्वविद्यालयों के मूल शैक्षिक स्तर को महत्व नहीं दे रहे हैं, यद्यपि वे विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से आवश्यक सूचना प्रदान कर प्रतिवर्ष अत्यधिक धन कमा रहे हैं ये विश्वविद्यालय न्यूनतम योग्यता के छात्र–छात्रओं को भी प्रवेश दे देते हैं। इसे असरदार तथा लाभदायक रुप में तकनीक के प्रयोग द्वारा उच्चतर शिक्षा के 'निगमीकरण' और 'मैक्डोनाल्डाइजेशन' के रुप में देखा जा सकता है।

इस प्रकार के विकास का सबसे अधिक प्रभाव परम्परागत विश्वविद्यालयों एवं शिक्षकों पर पड़ा है जो उच्चतर शिक्षा में तकनीक के विस्तृत प्रयोग से उत्पन्न दबाव को सहन नहीं कर पा रहे हैं। तकनीक विशेषज्ञों के समूह का मानना है कि इन विश्वविद्यालयों ने 21वीं सदी में नयी उम्मीदों का संचार किया है परन्तु इस सन्दर्भ में आलोचकों ने इसे दिखावा मात्र मान है। इन विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत छात्र–छात्रयें उपभोक्ता के रुप में वर्चस्व रखते है। इसलिये चुनौती मिलने की संभावना नहीं है। इस प्रकार के संस्थान बाजार–अर्थव्यवस्था में स्थान बनाने के लिये अपने स्तर को गिरने के लिये तत्पर है।

निष्कर्ष

उच्चतर शिक्षा में तकनीक शिक्षा के सकारात्मक नकारात्मक पक्षों पर केन्द्रित है। वर्तमान में ये प्रश्न भी विचारणीय है कि क्या तकनीक शिक्षा में डिजिटल असमानताओं को बढ़ावा दिया है? इन तथ्यों के बावजूद उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में सूचना व तकनीक ने अद्वितीय भूमिका निभायी है। जिसको आधुनिक समाजो के सन्दर्भ में नकारा नहीं जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *American Council of Education 2002 Technology as a Tool for Internationalization.*
2. *Dasgupta, A. K. 2004 I[s] these a case for profit Private University?*
3. *Economicst 2005 The Real Digital Divide.*
4. *Goswami Urmi 2003 The Economic Times New Delhi.*
5. *Knight, Jane 2003 'Updating the Definition of Internationalization' International Higher Education.*
6. *Fova-de-Moracs, FandSimon, I.2000 'Computer Networks and the Internationalization of Higher Education'.*